सरस्वती पूजा

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बराबना

मन भावन जैन सरस्वती, बराबना

जनम जरा मृतु, क्षय करै, हरै कुनय जड़रीति।
भव-सागरसों ले तिरै, पूजै जिन वच प्रीति।।

ॐ ह्रीं श्री जिन-मुखोद्भव- सरस्वत्यै पुष्पांजलिः निर्वपामीति स्वाहा।

छीरोदधि गंगा विमल तरंगा, सलिल अभंगा, सुखसंगा।
भरि कंचनझारी, धार निकारी, तृषा निवारी, हित चंगा।।
तीर्थंकर की ध्वनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई।
सो जिनवर वानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन-मानी पूज्य भई।।

ॐ ह्रीं श्री जिन-मुखोद्भव-सरस्वतीदेव्यै जलं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

कपूर मंगाया चन्दन आया, केशर लाया रंग भरी।
शारद-पद-वदों, मन अभिनंदो, पाप निकंदों दाह हरी।। तीर्थंकर...

ॐ ह्रीं श्री जिन-मुखोद्भव-सरस्वतीदेव्यै चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

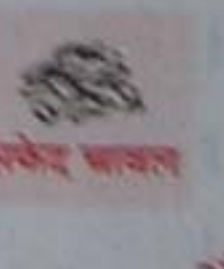

सुखदास कमोदं, धारक मोदं अति अनुमोदं चंदसमं।
बहु भक्ति बढ़ाई, कीरति गाई, होहु सहाई, मात ममं।। तीर्थंकर...

ॐ ह्रीं श्री जिन-मुखोद्भव-सरस्वतीदेव्यै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

बहु फूल सुवासं, विमल प्रकाशं, आनंद रासं लाय धरे।
मम काम मिटायो, शील बढ़ायों, सुख उपजायो दोष हरे।। तीर्थंकर...

ॐ ह्रीं श्री जिन-मुखोद्भव-सरस्वतीदेव्यै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

सफेद चिटकी

पकवान बनाया, बहुधृत लाया, सब विध भाया मिष्ठ महा।
पजूं थुति गाऊं , प्रीति बढ़ाऊँ , क्षुधा नशाऊँ हर्ष लहा।। तीर्थंकर...

ॐ ह्रीं श्री जिन-मुखोद्भव-सरस्वतीदेव्यै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।।५।।

पीली चिटकी

कर दीपक जोतं, तमक्षय होतं, ज्योति उदोतं तुमहिं चढ़े।
तुम हो परकाशक, भरम-विनाशक हम घट भासक, ज्ञानबढ़े।। तीर्थंकर...

ॐ ह्रीं श्री जिन-मुखोद्भव-सरस्वतीदेव्यै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।।६।।

धूप

शुभगंध दशोंकर, पावकमें धर, धूप मनोहर खेवत हैं।
सब पाव जलावे, पुण्य कमावें, दास कहावे सेवत हैं।। तीर्थंकर...

ॐ ह्रीं श्री जिन-मुखोद्भव-सरस्वतीदेव्यै धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।।।७।।

फल

बादाम छुहारी, लोंग सुपारी, श्रीफल भारी ल्यावत हैं।
मन वांछित दाता मेट असाता, तुम गुन माता, ध्यावत हैं।। तीर्थंकर...

ॐ ह्रीं श्री जिन-मुखोद्भव-सरस्वतीदेव्यै फलम् निर्वपामीति स्वाहा।।।८।।

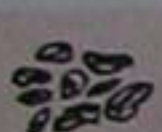
अर्घं

नयनन सुखकारी, मृदु गुनधारी, उज्जवल भारी, मोलधरें।
शुभगंध सम्हारा, वसन निहारा, तुम तन धारा ज्ञान करें।। तीर्थंकर...

ॐ ह्रीं श्री जिन-मुखोद्भव-सरस्वतीदेव्यै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।।९।।

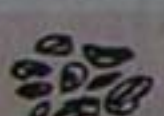
अर्घं

जल चंदन अक्षत फूल चरु, अरु दीप धूप अति फल लावै।
पूजा को ठानत जो तुम जानत, सो नर द्यानत सुखपावै।। तीर्थंकर...

ॐ ह्रीं श्री जिन-मुखोद्भव-सरस्वतीदेव्यै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।।१०।।

जयमाला

सोरठा

ओंकार ध्वनिसार, द्वादशांग वाणी विमल।
नमों भक्ति उद धार, ज्ञान करै जड़ता हरै।।
पहलो आचारांग बखानो, पद अष्टादश सहस प्रमानो।
दूजो सूत्रकृतं अभिलाषं, पद छत्तीस सहस गुरु भाषं।।

तीजो ठाना अंग सुजानं, सहस बयालिस पद सरधानं।
चौथो समवायांग निहारं, चौसठ सहस लाख इक धारम्।।

पंचम व्याख्या प्रज्ञप्ति दरसं, दोय लाख अट्ठाइस सहसं।
छट्ठो ज्ञातृकथा विसतारं, पाँच लाख छप्पन हज्जारं।।
सप्तम उपासकाध्ययनंगं, सत्तर सहस ग्यारलख भंगं।
अष्टम अंतकृत दस ईसं, सहस अठाइस लाख तेईसं।।

नवम अनुत्तरदश सुविशालं, लाख बानवै सहस चवालं।
दशम प्रश्न व्याकरण विचारं, लाख तिरानव सोल हजारं।।
ग्यारम सूत्र विपाक सु भाखं, एक कोड़ चौरासी लाखं।
चार कोड़ि अरु पंद्रह लाखं, दो हजार सब पद गुरुशाखं।।

द्वादश दृष्टिवाद पनभेदं, इकसौ आठ कोड़ि पन वेदं।
अड़सठ लाख सहस छप्पन हैं, सहित पंचपद मिथ्या हन है।।
इक सौ बारह कोड़ि बखानो, लाख तिरासी ऊ पर जानो।
ठावन सहस पंच अधिकाने, द्वादश अंग सर्व पद माने।।

कोड़ि इकावन आठ हि लाखं, सहस चुरासी छह सो भाखं।
साढ़े इकीस श्लोक बताये, एक एक पद के ये गाये।।
जा बानी के ज्ञान ते, सूझे लोक अलोक।
'द्यानत' जग जयवंत हो, सदा देत हूँ धोक।।

ॐ ह्रीं श्री जिन-मुखोद्भव-सरस्वतीदेव्यै महार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सरस्वती स्तवन

जगन्माता ख्याता जिनवर मुखांभोज उदिता।
भवानी कल्याणी मुनि मनुज मानी प्रमुदिता।।
महादेवी दुर्गा दरनि दुःखदाई दुरगती।
अनेका एकाकी द्वचयुत दशांगी जिनमती।।१।।

कहे माता तो को यद्यपि सबहीऽनादि निधना।
कथंचित् तो भी तू उपजि विनशै यों विवरना।।
धरैं नाना जन्म प्रथम जिनके बाद अबलों।
भयो त्यों विच्छेद प्रचुर तुव लाखों बरसलों।।